अभिव्यक्ति को सुलभ बनाने के लिए कला-एकीकृत पाठ

विश्वनाथ

जब हम महामारी के प्रभावों से उभरना शुरू करेंगे, तब ज़रूरी है कि हम अपने आसपास के लोगों के प्रति संवेदनशील रहें। इस अनुभव ने हमें अपनी अनेक ख़राब आदतों व जीवन जीने के तरीक़ों को बदलने का मौक़ा दिया है और स्वच्छता व प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण पर अधिक ध्यान देकर हम यह कर सकते हैं। हमारी सीखने-सिखाने की रणनीति का उद्देश्य स्कूलों में बच्चों को सहज और सुरक्षित वातावरण प्रदान करना होना चाहिए।

स्कूलों को बन्द हुए एक साल से अधिक हो गया है और अधिकांश बच्चे स्कूल में सीखी गई बातों को भूल गए हैं। यह उनके पढ़ने और लिखने के कौशलों के पुनर्निर्माण का समय है। लेकिन यह प्रक्रिया बच्चों की भावनात्मक तैयारी का आकलन करने के बाद ही शुरू की जानी चाहिए। आज, शिक्षक और पूरी शिक्षा व्यवस्था पशोपेश में है और वे यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि किस तरह पाठों की योजनाएँ बनाई जाएँ, कहाँ से शुरुआत हो और बच्चों के अब तक के सीखे हुए का आकलन कैसे करें।

कला गतिविधियों के माध्यम से सीखना

यह अत्यावश्यक है कि बच्चों को सीखने के आनन्दपूर्ण अनुभव हासिल हों। साथ ही यह सुनिश्चित करना भी उतना ही आवश्यक है कि सभी बच्चे स्कूल परिसर में अपना व दूसरों का ख़याल रखने के लिए ज़रूरी सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करें। इसके साथ ही शिक्षकों को निपुण तरीक़ों से बच्चों को याद दिलाते रहना होगा कि इस दौरान वे जो भी महसूस कर रहे हों उसे खुलकर व्यक्त करें। यह कुछ तरीक़े हैं जिन्हें शिक्षक अपना सकते हैं :

- प्रत्येक बच्चे के प्रति संवेदनशील और सम्मानपूर्ण रवैया अपनाएँ।
- बच्चों को अपनी भावनाओं को साझा करने और व्यक्त करने के लिए स्कूल के भीतर एक भयमुक्त वातावरण को सुनिश्चित करें।
- ऐसी समूह गतिविधियों की योजना बनाएँ जो बच्चों को *कोविड-19* से जुड़ी सावधानियों का पालन करते हुए एक-दूसरे के साथ घुलने-मिलने में मदद करें।
- स्थानीय स्रोत व्यक्तियों और बच्चों के माता-पिता को अपनी स्थानीय परम्पराओं, लोककथाओं और गीतों से परिचित कराने के लिए आमंत्रित करें।
- ऐसी गतिविधियों की योजना बनाएँ जो बच्चों में रचनात्मकता को बढ़ावा दें, जैसे कला को सभी कक्षाओं और सभी विषयों की पाठ-योजनाओं के साथ एकीकृत करना।
- माता-पिता और भाई-बहनों की मदद लेते हुए स्थानीय संसाधनों और कबाड़ का उपयोग करके कलाकृतियों के निर्माण को बढ़ावा दें।

स्कूल का पहला दिन

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, कलबुर्गी, कर्नाटक में स्कूल फिर से खुलने के पहले दिन हम पेंटिंग, क्ले मॉडलिंग और खेल खेलने जैसी कुछ कला गतिविधियाँ करने की योजना बना रहे हैं। हम उम्मीद कर रहे हैं कि ये गतिविधियाँ बच्चों के स्कूल लौटने के अनुभव को आनन्दपूर्ण बनाएँगी। यह योजना नए बच्चों को हमारी स्कूली संस्कृति से परिचित होने में मदद करेगी और इससे बच्चों के बीच का मेल-जोल बढ़ेगा। हम कलाकृतियों का एक प्रदर्शन भी आयोजित करेंगे जहाँ बच्चे अपनी कृतियों के बारे में बात करेंगे, अपनी कविताओं और गीतों को साझा करेंगे, अपनी धुनें बनाएँगे। साथ ही वे रसोई के बर्तनों, प्लास्टिक की बोतलों और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों की आवाज़ों का भी पता लगाएँगे। कुछ शारीरिक खेल भी खेलेंगे जो उनमें नई ऊर्जा भर दे। सारे विषयों में विभिन्न अवधारणाओं को सीखने में रुचि बढ़ाने के लिए हर सम्भव प्रयास किया जाएगा।

महामारी के दौरान, हमें सीखने-सिखाने की सामग्री (टीएलएम) को अलग-अलग सामुदायिक शिक्षण केन्द्रों तक ले जाने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इसके अलावा हमें बच्चों के साथ ऑनलाइन वीडियो साझा करने और गाने सुनने के दौरान इंटरनेट कनेक्टिविटी में परेशानी हुई। सामुदायिक कक्षाओं में जगह की कमी थी जिसने ज़्यादा-से-ज़्यादा बच्चों तक हमारी पहुँच के उद्देश्य को सीमित कर दिया। समूहों में इकट्ठा होने पर प्रतिबन्ध के कारण, स्थानीय कलाकारों व स्रोत व्यक्तियों को आमंत्रित करने और बच्चों को स्थानीय कलाओं से परिचित कराने की हमारी योजनाओं को भी स्थगित करना

पड़ा। सबसे अहम बात यह रही कि हम हर एक बच्चे के सीखने के परिणामों पर ध्यान नहीं दे पाए।

लेकिन इन सभी चुनौतियों के बावजूद, बच्चों ने सामुदायिक कक्षाओं में कराई गईं कला-आधारित गतिविधियों को बहुत पसन्द किया। इसके माध्यम से, उन्होंने ख़ुद से कई चीज़ों की खोज की और अपनी रचनात्मक क्षमताओं पर विश्वास करना सीखा। स्कूल के फिर से खुलने के बाद भी हम इसी तरह के अभ्यास जारी रखने की योजना बना रहे हैं।

वर्तमान में, हम आशा करते हैं कि स्कूल जल्द ही खुलेंगे और हम नियमित रूप से काम कर पाएँगे। अभी हमें बच्चों को पढ़ाने में जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, स्कूल में कक्षाओं के शुरू होने के बाद वे ख़त्म हो जाएँगी। जब हम प्रत्येक बच्चे के साथ आमने-सामने होकर काम करेंगे तब हम अधिक प्रभावी ढंग से पढ़ा सकेंगे। हम बच्चों को ऐसी शारीरिक और कला आधारित गतिविधियाँ भी करा पाएँगे जिनमें समूह में काम करना और एक-दूसरे से सीखना काफ़ी महत्त्वपूर्ण होता है। सबसे ज़रूरी बात यह है कि हम बच्चों के नियमित पोषण को सुनिश्चित कर पाएँगे जो बच्चों के सीखने और उनके समग्र विकास को सीधे प्रभावित करता है।

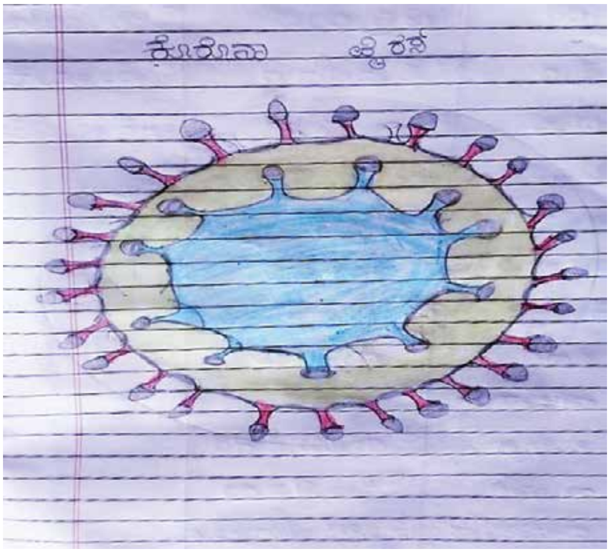
गतिविधियों का हमारा अनुभव

मैं यहाँ कुछ गतिविधियों के बारे में बता रहा हूँ जो हमने कोविड के कारण स्कूलों के बन्द होने के दौरान बच्चों के साथ कीं। जब हमने बच्चों को बात करने और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में सहयोग देने के लिए कुछ अभ्यास शुरू किए तो हमने पाया कि बच्चों की तरफ़ से सबसे ज़्यादा प्रतिक्रियाएँ कला से जुड़ी गतिविधियों और संगीत के दौरान आ रही थीं। हमने कुछ मज़ेदार गतिविधियों को भी शामिल किया ताकि बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी सीख सकें।

महामारी के दौरान बच्चे स्वच्छता और सुरक्षा सावधानियों के बारे में सीख सकें इसके लिए, हमने उन्हें यह गीत सिखाए



: कन्नड़ में 'बायी बायी कोरोना निनु होगाले बेकिदे' और अँग्रेज़ी में 'Wash, wash, wash your hands, wash



your hands together'। हमने इन गीतों को एक सैनिटाइज़र का उपयोग करते हुए सिखाया। इसमें हमने उन्हें सैनिटाइज़र से हाथों को रगड़कर साफ़ करने का सबसे अच्छा तरीक़ा दिखाया। शुरुआत में, जब बच्चे गाने में झिझक रहे थे तो हम शिक्षकों ने उनके साथ हाव-भाव और भंगिमाओं के साथ गाने गाए। जब हम सबने खड़े होकर भाव-भंगिमाओं के साथ धुनों



को गाया तो यह बात बच्चों को बहुत अच्छी लगी। हमने धीरे-धीरे mask, sanitizer, virus, social-distance, lockdown, unlock और seal-down जैसे शब्दों के अँग्रेज़ी अक्षरों और उनके अर्थों से बच्चों का परिचय कराया। धीरे-धीरे बच्चे सैनिटाइज़र का इस्तेमाल करते हुए ऊपर बताए गए गीत गाने लगे। वे इन शब्दों के अर्थों से भी वाक़िफ़ हो गए और नियमित बातचीत में उनका उपयोग भी करने लगे। कुछ बच्चों ने कन्नड़ में अपने गीत भी लिखे, उन्हें अपनी ही बनाई धुनों पर गाया और फिर यूट्यूब पर अपलोड भी किया।

बच्चे तब विशेष रूप से ख़ुश दिखे जब हमने उन्हें अनुपयोगी काग़ज़ से मास्क बनाना सिखाया। अपने बनाए हुए मास्क बच्चों ने अपने भाई-बहनों और माता-पिता को भी दिए। बच्चों ने उपलब्ध जानकारी और अपनी कल्पना के आधार पर कोरोना वायरस के चित्र बनाए। उन्होंने अपनी रचनाओं के बारे में चर्चा भी की।

कुछ बच्चे डाण्डिया स्टिक बनाकर डाण्डिया की ताल पर नाचे। इस गतिविधि का उद्देश्य था, बच्चों को लोक गीतों से परिचित कराकर उन्हें अपनी भावनाएँ व्यक्त करने में मदद करना। फिर भी कुछ बच्चे ऐसा करने में झिझक रहे थे, इसलिए हमने उन्हें एक डायरी बनाने को कहा जिसमें वे अपने विचारों और भावनाओं को खुलकर लिख सकते थे।

बच्चों ने कई आकृतियों (वृत्त, वर्ग, आयत और अनियमित आकारों की भी, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है) की डायरियाँ बनाईं। डायरियों में बच्चों ने अँग्रेज़ी में लिखा और इमोजी का इस्तेमाल करते हुए अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं।

एक अन्य गतिविधि में बच्चों ने काग़ज़ पर एक-दूसरे की हथेलियों को छापा। इस गतिविधि ने उन्हें अपने साथियों के साथ बातचीत करने का मौक़ा दिया जिससे वे धीरे-धीरे स्कूल में संवाद करने के लिए तैयार महसूस करने लगे। उन्होंने क्ले मॉडलिंग और सीप व मोतियों जैसी अनुपयोगी वस्तुओं से हार बनाने में भी आनन्द लिया।

बच्चों ने सिलाई जैसे व्यावहारिक कौशल भी सीखे। उन्होंने अपने नाम कपड़े पर सिलाई से उकेरे। उन्होंने चाय के कपों को पेंट करने में भी आनन्द लिया। इन कपों में वे बीज बोते थे और पौधों को बढ़ते हुए देखते थे। वे उन्हें नियमित रूप से पानी देते थे और पौधों में हो रही वृद्धि को प्रतिदिन रिकॉर्ड करते थे। उन्होंने घर पर खेलने के लिए लूडो, साँप-सीढ़ी और शतरंज जैसे खेलों के बोर्ड बनाए। इससे उन्हें आकृतियाँ, रेखाएँ और 1-100 तक की संख्याएँ सीखने में मदद मिली।





विश्वनाथ अज़ीम प्रेमजी स्कूल, कलबुर्गी, कर्नाटक में संगीत पढ़ाते हैं। उन्होंने गुलबर्गा विश्वविद्यालय से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत (गायन) में एमए किया है। उन्होंने शास्त्रीय संगीत (गायन) और हारमोनियम बजाना अपने पिता गुरु पण्डित तेवैय्या वस्त्रदमथ से सीखा है। उनसे vishwanath@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** संदीप दुबे